मलिक मुहम्मद जायसी

'पदमावत' सिंहल द्वीप-वर्णन खंड से

सिंघल दीप कथा अब गावौं[1]। औ सो पदुमिनि बरनि[2] सुनावौं।।

बरन क[3] दरपन[4] भाँति बिसेखा[5]। जेहि[6] जस रूप सो तैसेइ[7] देखा।।

धनि[8] सो दीप जहँ दीपक नारी। औ सो पदुमिनि दइअ[9] अवतारी।।

सात दीप बरनहिँ सब लोगू। एकौ दीप न ओहि[10] सरि[11] जोगू[12]।।

दिया दीप नहिँ तस[13] उजियारा[14]। सराँ दीप सरि होइ न पारा।।

जंबू दीप कहौं तस नाहीं। पूज[15] न लंक दीप परिछाहीं।।

दीप कुसस्थल आरन[16] परा। दीप महुस्थल मानुस हरा[17]।।

सब संसार परथमैं आए सातौं दीप।
एकौ दीप न उत्तिम सिंघल दीप समीप।।1।।

गंध्रपसेन[18] सुगंध[19] नरेसू। सो राजा यह ताकर[20] देसू।।

लंका सुना जो रावन राजू[21]। तेहु चाहि[22] बड़ जाकर साजू[23]।।

छप्पन कोटि[24] कटक[25] दर[26] साजा। सबै छत्रपति ओरँगन्ह[27] राजा।।

सोरह सहस[28] घोर[29] घोरसारा[30]। सावँकरन[31] बालका[32] तुखारा[33]।।

सात सहस हस्ती सिंघली। जिमि[34] कबिलास[35] एरापति बली।।

---

1. कह रहा हूँ 2. वर्णन 3. की 4. दर्पण 5. विशेषता 6. जिसका 7. वैसा ही 8. धन्य 9. कराया 10. उसके 11. तुलना 12. योग्य 13. वैसा 14. उजाला, प्रकाश 15. बराबरी करना 16. जंगल 17. हर लेता है 18. गंधर्वसेन 19. जिसका यश चारों ओर सुगंध की तरह फैला हुआ है 20. उसका 21. राज 22. अपेक्षा 23. साज-सज्जा 24. करोड़ 25. सेना 26. दरवाजा 27. सिंहासन 28. सहस्त्र, हजार 29. घोड़ा 30. घुड़साल 31. श्यामकर्ण नस्ल 32. वंशज 33. तुषार देश का 34. जैसा, समान 35. स्वर्ग

असुपती[36] क सिरमौर कहावा। गजपती क आँकुस गज नावा[37]।।

नरपती क कहाव नरिंदू[30]। भुअपती के जग दोसर[39] इंदू[40]।।

अइस चक्कवै[41] राजा चहूँ खंड मै होइ।

सबै आइ सिर नावहिं सरबरि[42] करै न कोइ।।2।।

जबहि दीप निअरावा[43] जाई। जनु कबिलास निअर भा आई।।

घन अँबराउँ [44] लाग[45] चहुँ पासा। उठै पुहुमि[46] हुति लाग अकासा।।

तरिवर[47] सबै मलै गिरि[48] लाए। भै जग[49] छाँह[50] रैनि[51] होइ छाए।।

मलै समीर सोहाई छाहाँ। जेठ जाड़ लागै तेहि माहाँ [52]।।

ओही छाँह रैनि होइ आवै। हरिअर सबै अकास दिखावै।।

पंथिक जौं पहुँचै सहि घामू[53]। दुख बिसरै[54] सुख होइ बिसरामू।।

जिन्ह वह पाई छाँह अनूपा[55]। बहुरि[56] न आइ सही यह धूपा।।

अस अँबराउँ सघन घन बरनि न पारौं अंत।

फूलै फरै[57] छहूँ रितु जानहु सदा बसंत।।3।।

फरे आँब[58] अति सघन सुहाए। औ जस फरे अधिक सिर नाए [59]।।

कटहर डार पींड[60] सों पाके। बड़हर सोउ अनूप अति ताके[61]।।

खिरनी पाकि खाँड[62] असि मीठी। जाँबु[63] जो पाकि भँवर असि डीठी[64]।।

---

36. अश्वपतियों के 37. झुकाना 38. नरेंद्र 39. दूसरा 40. इंद्र 41. चक्रवर्ती 42. बराबरी 43. नजदीक 44. आम का बगीचा 45. लगा हुआ 46. धरती, पृथ्वी 47. वृक्ष 48. मलयगिरि 49. संसार 50. छाया 51. रात 52. महीना 53. धूप 54. भूलना 55. अनोखा 56. पुनः 57. फलना 58. आम 59. झुकना 60. तना 61. उसके 62. गुड़ 63. जामुन 64. नजर आना, दीखना

नरिअर फरे फरी खुरहुरी। फुरी जानु इन्द्रासन[65] पुरी[66]।।

पुनि महु[67] चुवै[68] सो अधिक मिठासू। मधु जस मीठ पुहुप[69] जस बासू।।

और खजहजा[70] आव[71] न नाऊँ [72]। देखा सब रावन अँबराऊँ।।

लाग सबै जस अंब्रित[73] साखा। रहै लोभाइ सोइ जोइ चाखा।।

गुआ सुपारी जायफर सब फर फरे अपूरि[74]।

आस पास घनि इँबिली औ घन तार खजूरि।।4।।

बसहिं पंखि[75] बोलहिं बहु भाषा। करहिं हुलास[76] देखि कै साखा[77]।।

भोर होत बासहिं[78] चुहचुही[79]। बोलहिं पाँडुक एकै तुही।।

सारौ[80] सुवा सो रहचह करहीं। गिरहिं परेवा औ करबरहीं।।

पिउ पिउ लागै करैं पपीहा। तुही तुही कह गुडुरू खीहा[81]।।

कुहू कुहू कोइल करि राखा। औ भिंगराज[82] बोल बहु भाषा।।

दही दही कै महरि[83] पुकारा। हारिल बिनवै[84] आपनि हारा[85]।।

कुहकहिं मोर सोहावन लागा। होइ कोराहर बोलहिं कागा।।

जावँत[86] पंखि कहे सब बैठे भरि अँबराउँ।

आपनि आपनि भाषा लेहिं दइअ[87] कर नाउँ।।5।।

पैग[88] पैग पर कुआँ बावरी[89]। साजी[90] बैठक औ पाँवरी[91]।।

---

65. स्वर्ग 66. पवित्र नगरी 67. महुआ 68. टपकना 69. पुष्प 70. मेवा 71. आना, जानना 72. नाम 73. अमृत 74. भरपूर 75. पक्षी 76. आनंद, उल्लास 77. डाली 78. सुगंध लेना 79. फुलसुँघनी 80. मैना 81. खीझना 82. भुजंगा 83. ग्वालिन 84. निवेदित करना, बोलना 85. हाल 86. जितने 87. देव, ईश्वर 88. कदम, पग 89. तालाब 90. बनी थी 91 सीढ़ी

औरु कुड[92] बहु ठाँवहिँ ठाँऊ[93]। सब तीरथ औ तिन्हके[94] नाऊँ।।

मढ़[95] मंडप चहुँ पास सँवारे[96]। जपा तपा सब आसन मारे।।

कोइ रिखेस्वर[97] कोइ सन्यासी। कोइ रामजन कोइ मसवासी[98]।।

कोइ ब्रह्मचर्ज पँथ लागे। कोइ दिगम्बर आछहिं[99] नाँगे।।

कोइ सरसुती सिद्ध कोइ जोगी। कोइ निरास पँथ बैठ बियोगी।।

कोइ महेसुर[100] जंगम[101] जती। कोइ एक परखै देबी सती।।

सेवरा[102] खेवरा[103] बानपरस्ती सिध[104] साधक अवधूत[105]।

आसन मारि बैठ सब जारि[106] आतमा भूत।।6।।

मानसरोदक[107] देखिअ काहा[108]। भरा समुँद अस अति अवगाहा[109]।।

पानि मोति अस निरमर[110] तासू। अंब्रित बानि कपूर सुबासू।।

लंक दीप कै सिला[111] अनाई[112]। बाँधा सरवर[113] घाट बनाई।।

खँड खँड सीढ़ी भई गरेरी[114]। उतरहिं चढ़हिं लोग चहुँ फेरी।।

फूला कँवल रहा होइ राता[115]। सहस सहस पँखुरिन्ह कर छाता।।

उलथहिं[116] सीप मोति उतिराहीं[117]। चुगहिं हंस औ केलि[118] कराहीं।।

कनक पंखि[119] पैरहिं[120] अति लोने[121]। जानहु चित्र सँवारे सोने।।

ऊपर पाल[122] चहूँ दिसि अँब्रित फर सब रूख[123]।

---

92. कुंड 93. स्थान 94. उनके 95. मठ 96. सुशोभित 97. श्रेष्ठ ऋषि 98. महीने भर उपवास रखने वाला 99. होना 100. महेश्वर 101. शैवों के एक समुदाय में गुरु की उपाधि 102. श्वेतांबर (जैन) 103. जैन मुनि 104. सिद्ध 105. साधुओं का एक भेद 106. जलाना 107. मानसरोवर 108. क्या (कैसा सुंदर) 109. अगाध 110. निर्मल 111. पत्थर 112. मँगाना 113. तालाब, सरोवर 114. घुमावदार 115. सुंदर 116. उलटना 117. पानी के उपर तैरना, उतराना 118. क्रीड़ा 119. सुनहले पक्षी 120. तैरते हुए 121. सुंदर 122. फलों को गरमी पहँचाकर पकाने के लिए पत्ते बिछाकर रखने की विधि 123. वृक्ष, पेड़

देखि रूप सरवर कर गइ पिआस औ भूख।।7।।

पानि भरइ आवहिं पनिहारीं। रूप सुरूप[124] पदुमिनी नारीं।।

पदुम[125] गंध तेन्ह अंग बसाहीं। भँवर[126] लागि तेन्ह संग फिराहीं[127]।।

लंक[128] सिंघिनी सारँग[129] नैनी। हँसगामिनी कोकिल बैनी[130]।।

आँवहिं झुंड सो पाँतिहि पाँती। गवन[131] सोहाइ[132] सो भाँतिहि भाँती।।

केस मेघावरि[133] सिर ता पाई[134]। चमकहिं दसन[135] बीजु[136] की नाई।।

कनक कलस मुख चंद दिपाहीं[137]। रहस[138] कोड[139] सो आवहिं जाहीं।।

जासौं वै हेरहिं[140] चख[141] नारी। बाँक[142] नैन जनु हनहिं[143] कटारी।।

मानहु मैन मुरति[144] सब अछरीं[145] बरन अनूप।

जेन्हिकी ये पनिहारी सो रानी केहि रूप।।8।।

ताल[146] तलावरि[147] बरनि न जाहीं। सूझइ वार पार तेन्ह नाहीं।।

फूले कुमुद केत[148] उजिआरे। जानहुँ उए [149] गगन महँ तारे।।

उतरहिं मेघ चढहिं लै पानी। चमकहिं मंछ[150] बीजु की बानी।।

पैरहिं पंखि सो संगहि संगा। सेत[151] पीत[152] राते[153] बहु रंगा।।

चकई चकवा केलि कराहीं। निसि[154] बिछुरहिं औ दिनहिं मिलाहीं।।

कुरलहिं[155] सारस भरे हुलासा[156]। जिअन हमार मुअहिं एक पासा।।

---

124. सुंदर 125. कमल 126. भँवरे 127. घूमते हैं 128. कमर 129. मृग 130. बोली 131. चलते हुए 132. अच्छा लगना 133. मेघवाला 134. पैर 135. दांत की पंक्ति 136. बिजली 137. दीप्त होना 138. प्रसन्नता 139. कौतुक 140. देखती हैं 141. आँख 142. बक्र, टेढ़ा 143. मारना 144. काम की मूर्ति (मैन मुरति) 145. अप्सरा 146. पोखर 147. तलैया 148. कमल 149. उगना 150. मछली 151. सफेद 152. पीला 153. लाल 154. रात 155. बोलते हुए 156. उल्लास से

केंवा[157] सोन ढेक बग लेदी। रहे अपूरि[158] मीन जल भेदी।।

नग अमोल[159] तेन्ह तालन्ह दिनहिं[160] बरहिं[161] जनु दीप।

जो मरजिआ[162] होइ तहँ सो पावइ वह सीप।।9।।

पुनि जो लाग बहु अंब्रित वारी[163]। फरीं अनूप होइ रखवारी।।

नवरँग नीबू सुरँग[164] जँमीरा[165]। औ बादाम बद अंजीरा।।

गलगल[166] तुरँज[167] सदाफर[168] फरे। नारँग अति राते रस भरे।।

किसमिस सेब फरे नौ[169] पाता। दारिवँ [170] दाख देखि मन राता।।

लागि सोहाई हरपारेउरी[171]। ओनइ[172] रही केरन्ह की घंउरी।।

फरै तूत कमरख औ निउँजी[173]। राय करौंदा बैरि चिरउँजी।।

संखदराउ[174] छोहारा डीठे। औरु खजहजा[175] खाटे मीठे।।

पानी देहिं खँडवानी[176] कुअँहि खाँड बहु मेलि[177]।

लागीं घरी रहट की सींचहिं अंब्रित बेलि।।10।।

---

157. एक जलपक्षी 158. भरपूर 159. अमूल्य 160. दिन में 161. जलते हैं 162. गोताखोर 163. बगीचा 164. सुंदर रंग का 165. जम्मीरी नीबू 166. एक प्रकार का नीबू 167. चकोतरा 168. शरीफा 169. नया, नए 170. अनार 171. आँवले के समान एक छोटा फल 172. झुक जाना 173. लीची 174. एक प्रकार का खट्टा फल 175. मेवा 176. शरबत 177. मिलाकर